



Original Article

‘भूख ने गीत गाए’ नवगीत संग्रह में शोषित वर्ग

प्रो. (डॉ) गोरख निळोबा बनसोडे

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

सरदार बाबासाहेब माने महाविद्यालय रहमतपूर, तह – कोरेगाव, जि – सातारा, महाराष्ट्र 415001

Manuscript ID:

IJAAR-C130377

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 401 - 405

Submitted: 05 Feb. 2026

Revised: 17 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रो. (डॉ) गोरख निळोबा बनसोडे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787422

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787422>



Creative Commons



शोध सारांश:

कवि रूपसिंह ‘रूप’ जी ने अपने ‘भूख ने गीत गाए’ इस की चौथी काव्य रचना के माध्यम से वर्तमान युगीन जनता को स्वार्थी, सत्तालोलुपता व्यवस्था से बचाकर जागृत करने का प्रयास किया है। राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था लोगों के कल्याण के निर्माण की गई है। लेकिन स्वार्थी लोग जनतंत्र का, सामान्य लोगों के वोट का गैर इस्तमाल करके जनता को लुट रहे हैं। जनता के हित में दिखावा करते हुए जनता को तबाह कर रहे हैं। लोगो ने जात धर्म के नाम पर बटवारा करके समाज को विभाजित करके अपना स्वार्थ साध रहे हैं। ऐसा हर पांच साल जनता का शोषण हो रहा है। आम जनता को चंद पैसे के लालच में फंसाकर उनके वोट बेचने के लिए मजबूर किया जाता है। बाद में पांच साल तक लोगों के हाथ में पश्चाताप के सिवा हाथ में कुछ रहता नहीं है। भारतीय समाज में यह शोषण का सिलसिला हर राजनेता जीवन भर जनता के साथ करता आया है। इससे लोग जनतंत्र के बजाय परतंत्र का ही अनुभव ले रहे हैं। भारत देश पूरे विश्व का बड़ा गणतंत्रवाला देश होकर भी वंचित जीवन जी रहा है। दुख, अनास्था, शोषण, लाचारी, गरीबी के कारण देश में लोग तानाशाही का ही अनुभव कर रहे हैं।

राजनीतिक सत्ता के षडयंत्र के कारण पढ़े लिखे लोग भी अशिक्षित और अंधविश्वासी व्यवस्था का शिकार हो रहे हैं। जिनकी आर्थिक व्यवस्था अच्छी है वे आंखे मुदकर जीवन जी रहे हैं। वे डर के कारण सामाजिक परिवर्तन में कोई योगदान नहीं देना चाहते हैं। स्वार्थी जीवन अधिकांश लोगों का स्थाई भाव बन गया है। लेकिन यह वर्ग उनके बच्चों का और अगली पीढ़ी का भविष्य तबाह कर रहे हैं। यह आज उनकी ध्यान में नहीं आ रहा है। भविष्य में यह गलती समझते समय देर हो जाएगी। तब उस समय की पीढ़ी उनका धिक्कार रहेगी। यह निश्चित है।

बीज शब्द - लोकतंत्र, आझादी, जागरण, शोषण, उत्पीड़न, अंधविश्वास, पाखंड, परिवर्तन, संघर्ष, षडयंत्र, मुक्ति, विषमता आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रो. (डॉ) गोरख निळोबा बनसोडे. (2026). ‘भूख ने गीत गाए’ नवगीत संग्रह में शोषित वर्ग. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 401 - 405. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787422>



प्रास्ताविक:

भारतीय समाज व्यवस्था उच्च-नीच, श्रेष्ठ कनिष्ठ सवर्ण अवर्ण की श्रेणी के कारण कमजोर और विभाजित हुई है। इससे भारत देश की अखंडता और एकता सैकड़ों साल से टूट गई है। वर्तमान युगीन स्वार्थी राजनीति के कारण जाति धर्म का बोल बाला है। वोट की राजनीति ने प्रजातंत्र में तानाशाही बहुत बढ़ गई है। इसलिए शासन की कितनी भी योजनाएं होने के बावजूद भी उनमें भ्रष्ट व्यवस्था होने के कारण लोग अपनी प्रगति नहीं कर पाते हैं। दिन, दलित, मजदूर, कृषक, नारी वर्ग का शोषण बढ़ता जा रहा है। इस व्यवस्था में जब तक परिवर्तन नहीं होगा तब तक सशक्त भारत का सपना असंभव है।

शोध आलेख:

कवि रूपसिंह 'रूप' का जीवन परिचय:

कवि रूपसिंह 'रूप' का जन्म उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद के छोटिया गांव के एक गरीब जाटव परिवार में 1 जुलाई 1947 को हुआ। उनकी माँ का नाम लक्ष्मी देवी और पिताजी का नाम संतोषी लाल था। पिताजी परिवर्तनवादी विचारधारा के व्यक्ति थे।

रूपसिंह जी ने एम एससी (गणित) ए.एम.आई.ई.टी.ई. की डिग्री बी.टैक.के समकक्ष प्राप्त की तथा सेवानिवृत्ति के बाद समाजशास्त्र में एमए किया। कक्षा बारह तक हर क्लास में टॉप किया। आठवें क्लास में पूरे आगरा जिला में टॉप किया। यूपी बोर्ड से व आगरा यूनिवर्सिटी से मेरिट स्कॉलरशिप प्राप्त की।

दूरसंचार विभाग में सन 1970 से 2007 तक इंजीनियर के रूप में सेवा की। युवा अवस्था से सर्विस के

दौरान सामाजिक कार्य करते रहे। सर्विस में यूनियनों में भी भागीदारी निभाते रहे। दूरसंचार विभाग में जिला सचिव, जिला अध्यक्ष व परिमंडल अध्यक्ष (यूपी पश्चिम सर्किल) के पद पर रहकर इंजीनियर्स एसोसिएशन का बखूबी दायित्व निभाते हुए विभागीय समस्याओं को सुलझाने में योगदान दिया।

सन् 1993 में भारत सरकार ने योग्यता के आधार पर नई तकनीकी शिक्षा के लिए दो महीने के लिए जर्मनी भेजा गया था। जर्मनी से फ्रांस व स्विट्जरलैंड की यात्रा भी की। लौटकर तमाम शहरों में नई तकनीक के दूरभाष केन्द्रों की स्थापना की। टेस्टिंग, औपरेशन व मेंटेनेंस का काम करते हुए जनता को बेहतर सेवा प्रदान की।

साहित्यिक लेखन:

हालात ए हाजिरा, कब तक सोओगे?, अदबूझी चिंगारियां के बाद भूख ने गीत गाए ये काव्य रचनाएं लिखी है इसके साथ विविध पत्र पत्रिका में लेखन करते रहे।

सम्मान:

आदर्श सेवा के लिए दूरसंचार विभाग ने दूरसंचार सेवा मेडल और रु. 11000/- की धनराशि से पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। विविध संस्थाओं ने साहित्य लेखन और सामाजिक कार्य के लिए सम्मानित किया।

नवगीत संग्रह 'भूख ने गीत गाए' का परिचय:

'भूख ने गीत गाए' यह रूपसिंह 'रूप' की चौथी काव्य रचना है। इसे कवि ने नवगीत संग्रह कहा है। यह सन 2026 के जनवरी में ही पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली से



प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 50 कविताएं हैं। यह 120 पृष्ठों की किताब है। यह नवगीत संग्रह कवि ने महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले जी को समर्पित किया है। नवगीत संग्रह को उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध कवि, गजलकार और समीक्षक एस एन प्रसाद जी ने भूमिका लिखी है और रचनाकार रूपसिंह रूप ने आत्म कथ्य लिखा है।

नवगीत संग्रह ‘भूख ने गीत गाए’ का अनुशीलन:

रूपसिंह ‘रूप’ का ‘भूख ने गीत गाए’ यह नवगीत संग्रह देश की आजादी के बाद भी इस देश की आम जनता जो दीन-दलित, मजदूर है वह आज भी भूखी प्यासी तथा वंचित जीवन जीने के लिए मजबूर है। ‘भूख ने गीत गाए’ इस नवगीत संग्रह के पहले गीत ‘मैंने कोई गीत लिखा’ में कवि रूपसिंह ‘रूप’ कहते हैं,

‘मैंने तो बस व्यथा लिखी / अंतर्तम की
शोषण उत्पीड़न की, जीवन के गम की
शिशुओं का क्रंदन, औ / नारी की चीखें
बाण- बिद्ध तड़पते / पंछियों की किर्रें’ 1

अर्थात् कवि अपने अनुभव से देखता आया है की, भारतीय सामाजिक व्यवस्था विषम रही है उसमें किसी प्रकार का अंतर नहीं आया है। शोषित पीड़ित लोग अपने जीवन में दुख का अनुभव कर रहे हैं। जैसे छोटे बच्चे रोते हैं, महिलाएं चीखती हैं और पंछी को बाण लगने पर पंछी को जो वेदना होती है उसी तरह दीन-दलित सर्वहारा वर्ग सवर्ण के तानाशाही माहोल से दुखी एवं पीड़ित बना है।

‘जागरण की बात’ गीत में कवि कहते हैं,

‘‘हो न पाएं दग्ध अब / दामन किसी
सिसकियों में ढल रही / लाचार का
हर सपन साकार हो / उतरे धरा

हाथ में उत्तर रहे / हर वार का

प्यार से बंधुत्व से सींचे इसे

या यह हमारा विविधता का देश है “2

दीन-दलित तथा शोषित वर्ग को विषम व्यवस्था के प्रति जागृत करना कवि अपना परम कर्तव्य मानते हैं। इसलिए कवि ने यह जागरण गीत लिखकर लोगों में उत्साह तथा उमंग भरते हुए नई क्रांति करने की बात की है।

‘सदियों से हमने’ गीत में कवि कहते हैं,

‘‘सदियों से हमने’ जिसको, व्यवहार में उभारा

उस धर्म-टोकरे को / अब सर से है उतारा “3

अर्थात् हम दलित तथा शूद्र है ऐसा कहकर हम पर स्वार्थवश पर जाति और धर्म के नियम थोपे गए। हमें जीवन भर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के गुलाम बनाकर उनकी सेवा में लगाया। हमारा अमानवीय शोषण होता रहा है। अब यह बहुत देर से हमारी समझ में आ गया है। इसलिए अब यह शोषण हमसे सहा नहीं जा रहा है। इसलिए इस अमानवीय बोझिल और असहाय हो रही जात और धर्म की टोकरी को सर से उतारना चाहते हैं। अर्थात् कवि जात धर्म के नाम पर जो विषम व्यवस्था निर्माण हुई है उस व्यवस्था को खोखला बता रहे हैं।

‘सदियों के खट्टे-मीठे सपने’ गीत में कवि कहते हैं,

‘‘आश्वासन दे रहे गवाही, झूठे हो

करनी हो प्रतिक्रांति, करो आगे आओ

षड्यंत्रों के तीर/ पीठ पर न चलाओ”4

सदियों से दीन दलित वर्ग को झूठे आश्वासन तथा वादे देकर गुमराह किया जा रहा है। इसलिए अब इन वादों में कभी भी फंसना नहीं चाहिए। हर वक्त, दिन, महीने, साल, पीढ़ी दर पीढ़ी झूठे वादों से इस समाज का शोषण हो रहा है।



इसलिए कवि के मतानुसार अब हमें इस व्यवस्था के खिलाफ निडरता से प्रतिक्रान्ति करने की आवश्यकता है। सोहनलाल सुमनाक्षर कहते हैं, “दलित समाज का इतिहास हजारों वर्षों के अन्याय अत्याचार उत्पीड़न शोषण दमन दुराचार और तिरस्कारों से भरा पड़ा है।”⁵

“जन- मन की अभिव्यक्ति” गीत में कवि कहते हैं,

आओ सारे प्रतिबंधों को आज तोड़ दे
जुल्मों की बहती नदियां की धार मोड़ दे
मानवता को तनिक सांस राहत की दे दे
खंड खंड में पड़ी हुई श्रृंखला जोड़ दे “6

कवि सामाजिक व्यवस्था में समग्रता से उथलपुथल करके क्रांति लाना चाहते हैं। श्रेष्ठ कनिष्ठता के जो सभी प्रकार के प्रतिबंध समाज पर लगाए गए हैं वे हटाने तथा तोड़ने की बात करते हैं।

“जिसने मेरे चरित्र -चित्रण में” कवि कहते हैं,

“उन्हीं महापुरुषों के बल पर हर आंगन में उजियाले है
आज चमन आजाद हो रहा आताताई तूफानों से
झूम उठा है पत्ता-पत्ता तितली- मोरों के गानों से”⁷

अर्थात् हमारा देश अनेक समाजसुधारकों का तथा महापुरुषों का देश है। उनके सामाजिक उत्थान के महान कार्य के कारण ही दिन दलित वर्ग के आंगन का अंधेरा दूर होकर उजियाला निर्माण हुआ है। उन्हीं के अथक प्रयासों से हमारा देश सही अर्थ में स्वतंत्र बना है। यह तितली-भौरें, पेड़-पत्ते भी इसी आजादी के कारण आज गा रहे हैं। यह उन महान व्यक्तियों के कार्य का परिणाम हैं की समाज का अंधविश्वास कर्मकांड बहुत मात्रा में कम होकर आज लोगों ने विज्ञान का रास्ता अपनाया है। डॉ. टी. पी. राही कहते हैं, “भारत की असमान सामाजिक व्यवस्था ने पूजा पाठ व्रत त्यौहार देवी

देवता स्वर्ग नर्क जैसी अनेक मान्यताओं से दलित समुदाय को दलदल में फंसाया है।”⁸ इसलिए समाजसुधारकों ने विज्ञान का मार्ग दिखकर लोगों का यथासंभव प्रबोधन करके समाज को प्रगति के मार्ग पर लाया है।

“आंगन जहां लगानी थी” गीत में कवि कहते हैं,

“नव विकास से ध्वस्त हों गईं जिजीविषाएं
आश्वासन से छली गईं भोली आशाएँ
घोर आस्था की झूठी झुक गई पताका
खतरे में अस्तित्व आ गया मानवता का “9

आज समाज में विकास के नाम पर धोखाधड़ी चल रही है। भोली भाली जनता को आश्वासन देकर गुमराह किया जा रहा है, फंसाया जा रहा है। दलित वर्ग के साथ बाद अब पूरी मानवताही खतरे में आ गई है।

“लोकतंत्र और आजादी” गीत में कवि कहते हैं,

“नफरत और बारूद बिछी है गांव गांव और शहर
शहर धर्म की चिंगारी सुलगी है बरस रहा है कहर कहर ये
कैसा है पैतरा अमरित में विष घोल रहा है “10

आज वर्तमान समय में देश का लोकतंत्र और आजादी ही खतरे में आई है। धर्म और जाति के नाम पर हर गांव-गांव और शहर-शहर में मनुष्य के बीच नफरत का बारूद बिछाया जा रहा है। अच्छे अमृत में विष निर्माण किया है।

निष्कर्ष:

कवि आदरणीय रूपसिंह रूप जी दूरसंचार विभाग के सेवानिवृत्त एक आदर्श उच्च शिक्षित इंजीनियर हैं। इस नौकरी के माध्यम से उन्होंने समाज को और सामाजिक व्यवस्था को बारिकी से देखा है। आम आदमी की जरूरतें बहुत कम होती हैं। उसका जीवन मेहनत करते-करते समाप्त



हो जाता है, लेकिन आम आदमी और परिवार की कम से कम जरूरतें भी पूरी नहीं हो पाती है। समाज की इस इस स्थिति में परिवर्तन होने के लिए सामाजिक राजनीतिक हर कामकाज में पारदर्शकता आने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची:

1. रूपसिंह रूप, 'भूख ने गीत गाए', पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.सन 2026 ई. पृ. 21
2. वही पृ. 27
3. वही पृ. 30
4. वही पृ. 39
5. सोहनलाल सुमनाक्षर, 'अंधा समाज और बहरे लोग', भारतीय दलित साहित्य अकादमी, प्रकाशन, दिल्ली, द्वि. संस्करण सन 2002 ई. पृ. 05
6. रूपसिंह रूप, 'भूख ने गीत गाए', पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.सन 2026 ई. पृ. 46
7. वही पृ. 48
8. डॉ. टी. पी. राही, 'दलित हिंदी कविता के नए संदर्भ', कल्चरल पब्लिशर्स, लखनऊ, प्र.सं.सन 1996 ई. पृ. 79
9. रूपसिंह रूप, 'भूख ने गीत गाए', पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.सन 2026 ई. पृ. 51
10. वही पृ. 59